

# अभ्यासवान् भव

## दशमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्



1075

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी  
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्  
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-141-6

**प्रथम संस्करण**

मई 2019 ज्येष्ठ 1941

**PD 75T RSP**

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण  
परिषद्, 2019

₹ 105.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर  
पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान  
और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली  
110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ?????????????  
??  
द्वारा मुद्रित।

**सर्वाधिकार सुरक्षित**

- ❑ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिकृति, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- ❑ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ❑ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

**एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग  
के कार्यालय**

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस  
श्री अरविंद मार्ग  
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708  
108, 100 फीट रोड  
हेली एक्सटेंशन, होस्टेल्केरे  
बनाशकरी III स्टैज  
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740  
नवजीवन ट्रस्ट भवन  
डाकघर नवजीवन  
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446  
सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस  
निकट: धनकल बस स्टॉप पतिहटी  
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454  
सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स  
मालीगाँव  
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

**प्रकाशन सहयोग**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर  
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल  
मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा  
मुख्य व्यापार प्रबंधक : बिबाष कुमार दास  
उत्पादन सहायक : ओमप्रकाश

**आवरण एवं चित्र**

डी.टी.पी. प्रकोष्ठ

## पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मायन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमकक्षायाः छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं चतुर्दशाध्यायेषु निर्मितस्य “अभ्यासवान् भव” इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवादः, चित्रवर्णनम्, सन्धिः, समयः, वाच्यम्, अशुद्धिसंशोधनं, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोगः इति विषयेषु अभ्यासक्रमाः दत्ताः येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। एतदतिरिच्य मिश्रिताभ्यासद्वयम् आदर्शप्रश्नपत्रमेकम् अपि प्रदत्तं येन छात्राः भाषाकौशलेन सह परीक्षायाः कृतेऽपि सन्नद्धाः भवेयुः। परिशिष्टे ध्येयवाक्यानां, व्यवहारवाक्यानां चापि सन्निवेशः कृतः येन कक्षायामपि छात्राः संस्कृतभाषया सम्भाषणे समर्थाः भवेयुः। अनेन पुस्तकेन छात्राः संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षाः भवेयुः इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली  
मार्च, 2019

हृषिकेश सेनापति  
निदेशकः  
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

## पुस्तक निर्माण समिति

### सदस्य

आभा झा, पी.जी.टी. संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली

कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं 3, दिल्ली कैंट, नयी दिल्ली

वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

शशिपाल शर्मा, निदेशक, जयति संस्कृतम्, नोएडा

सरोज गुलाटी, पी.जी.टी. संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली

सरोज पुरी, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पीतम पुरा, नयी दिल्ली

### समन्वयक

के.सी.त्रिपाठी, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

NBCampus



## आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद्, अनीता, रेखा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, रिकेश भदूला, जे.पी.एफ., भाषा शिक्षा विभाग एवं पुस्तक के संपादन के लिए ममता गौड़, संपादक-संविदा, प्रवीन कुमार, नरेश कुमार, आरती, डी.टी.पी. ऑपरेटर, प्रकाशन प्रभाग, के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

NBCampus



## भूमिका

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि ।  
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

शुद्ध भाषा प्रयोग के लिए और ग्रन्थों के भावों को आत्मसात् करने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि व्याकरण का प्रत्यक्ष ज्ञान देने का प्रचलन आज की शिक्षा पद्धति में नहीं है, पाठों में प्रयुक्त व्याकरण-बिंदुओं को अनेक उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इस तरह व्याकरण के नियमों को स्मरण करने की नीरस प्रक्रिया से बच्चों को गुजरना नहीं पड़ता और व्याकरण वाक्य संरचना का नियमानुसार ज्ञान भी हो जाता है।

अभ्यासवान् भव में दशम कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार अभ्यास हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराई गई है, जिससे वे न केवल आवश्यक व्याकरण-बिंदुओं से परिचित होते हैं, बल्कि वाक्य संरचना कौशल का पर्याप्त ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। पुनः-पुनः अभ्यास करने से विषयों का ज्ञान हो जाता है और वह स्मृत विद्या चिरकालपर्यन्त याद रहती है। 'अभ्यासे विषं विद्या' यह जानते हुए विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास पुस्तिका में अपठितांश, पत्र, चित्रवर्णन, अनुच्छेदलेखन, संस्कृतानुवाद, सन्धि, समास, प्रत्यय, अव्यय, समय, वाच्य और अशुद्धि संशोधन पर आधारित बारह पाठ हैं। इसके अतिरिक्त मिश्रित अभ्यास हेतु दो कार्यपत्रिकाएँ त्रयोदश पाठ में समाविष्ट की गई हैं। चतुर्दश पाठ में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार एक आदर्श प्रश्न पत्र भी समाविष्ट किया गया है, जो परीक्षा हेतु तैयारी में सहायक होगा।

परिशिष्ट में ध्येय-वाक्यों और व्यवहार-वाक्यों का संकलन है, जिससे छात्रों की संभाषण क्षमता में वृद्धि होगी।

आशा है यह अभ्यास पुस्तिका छात्रों को संस्कृत भाषा-संरचना, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुधी समालोचकों के सत् परामर्शों का सदैव स्वागत है।

## मङ्गलम्

अभ्यासः कार्यसिद्ध्यर्थं  
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिताः।  
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं  
तस्मादभ्यासवान्भव॥

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यसामो वयं विद्यां  
यावतीमधिकाधिकाम्।  
तावदग्रे जगत्यस्मिन्  
सरिष्यामो न संशयः॥

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।

NBCampus

## विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्	iii
भूमिका	vii
मङ्गलम्	viii
1. अपठितावबोधनम्	1
2. पत्रलेखनम्	11
(क) अनौपचारिकम् पत्रम्	
(ख) औपचारिकम् पत्रम्	
3. अनुच्छेदलेखनम्	18
4. चित्रवर्णनम्	21
5. रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)	31
6. सन्धिः	38
7. समासाः	48
8. प्रत्ययाः	57
9. अव्ययानि	76
10. समयः	81
11. वाच्यम्	84
12. अशुद्धिसंशोधनम्	89
13. मिश्रिताभ्यासः	94
14. आदर्शप्रश्नपत्रम्	101
परिशिष्टम्	
व्यवहार-वाक्यानि	108
ध्येय-वाक्यानि	112
संवादाः	113

NBCampus







शिक्षिता बालिका

शिक्षितः समाजः

सशक्ता बालिका

सशक्तः समाजः

स्वस्था बालिका

स्वस्थः समाजः





1075CH01

## अपठितावबोधनम्

अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा यथानिर्देशं प्रश्नान् उत्तरत —

1. धात्रीफलं सर्वेषु ऋतुषु लाभदायकं भवति। धात्रीफलम् 'आमलकम्' इत्यपि कथ्यते। शरीरस्य स्वास्थ्यरक्षणाय फलस्यास्य प्रयोगः अवश्यमेव कर्तव्यः। इदं फलं नेत्रयोः ज्योतिवर्धनाय, केशानां सौन्दर्यवृद्धये, त्वचः कान्तिवर्धनाय च बहूपयोगि भवति। सामान्यतया अस्य प्रयोगः अवलेहरूपेण, उपदंशरूपेण च भवति। इदं रक्तकोशिकानिर्माणे अपि सहायकं भवति। अस्य सेवनेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति। ग्रीष्मर्तौ फलमिदं शरीरस्य तापम् अपनयति। अस्य नियमितसेवनेन स्मरणशक्तिरपि वर्धते। प्राचीनकाले कार्तिकमासस्य नवम्यां तिथौ धात्रीवृक्षस्य अधः सहभोजस्य अपि परम्परा आसीत्। केषुचित् स्थलेषु अधुना अपि एषा परम्परा परिपाल्यते। वृक्षस्य अधः भोजनं पच्यते चेत् भोजनं सुस्वादुं स्वास्थ्यवर्धकं च भवतीति अस्माकं पूर्वजानां चिन्तनमासीत्। एतदतिरिच्य सहभोजनेन प्रेम्णः भावोऽपि जागर्ति वर्धते च इत्यपि जनाः आमनन्ति। सर्वतोऽधिकं परम्परेयं धात्रीफलस्य महिमानं प्रकटीकरोति।

### अभ्यासः

(i) एकपदेन उत्तरत —

- (क) धात्रीफलं कदा लाभदायकं भवति? .....
- (ख) धात्रीफलस्य अपरं नाम किम्? .....
- (ग) धात्रीफलं कस्मिन् सहायकं भवति? .....
- (घ) सहभोजनेन कीदृशः भावः जागर्ति? .....

(ii) पूर्णवाक्येन उत्तरत —

- (क) धात्रीफलं कथं बहूपयोगि अस्ति? .....
- (ख) प्राचीनकाले कीदृशी परम्परा आसीत्? .....